International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 12 Issue 6, June 2022,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जनजाति क्षेत्र में आध्यात्मिक चेतना – आर्य समाज के संदर्भ में

सोहनलाल वड़किया
(व्याख्याता हिन्दी साहित्य)
श्री योगेश्वर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आमलीपाड़ा, सज्जनगढ़

सारांश–

दक्षिणी राजस्थान के वागड़ क्षेत्र में बांसवाड़ा, डूंगरपुर जिले सम्मिलित है। भील, मीणा, गरासिया और डामोर जनजातियां निवास करती है। भील जनजाति बहुल बांसवाड़ा–डूंगरपुर जिले जनजाति उपयोजना क्षेत्र (Tribal Sub-Plan Area)घोषित है। लगभग 80 प्रतिशत आदिवासी आबादी वाला वागड़ का विशाल क्षेत्र $23^0.1$ से $24^0.1$ उत्तरी अक्षांश एवं $73^0.1$ से $74^0.24$ पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। इसके उत्तर में उदयपुर, पूर्व में मध्यप्रदेश तथा दक्षिण पश्चिम में गुजरात राज्य की सीमाएं लगी हुई है। इसका क्षेत्रफल करीब 4000 वर्गमील है। वागड़ में जनजातियों की 25.46 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। राजस्थान में राजनैतिक जागृति के उदय एवं विकास में 19वीं शताब्दी में हुए सामाजिक व धार्मिक सुधार आन्दोलन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। आर्य समाज के संस्थापक एवं प्रर्वतक स्वामी दयानन्द सरस्वती थे जिनका मुख्य कार्यक्षेत्र राजस्थान था। वे सर्वप्रथम भरतपुर, करोली तत्पश्चात् वहां से वे जयपुर, अजमेर, मेवाड़ के आसीन्द, बनेड़ा, उदयपुर व राजस्थान के अन्य स्थानों की यात्रा की तथा अपने विचारों से जनजागृति उत्पन्न की। निःसंदेह स्वामी दयानन्द सरस्वती की राजस्थान यात्रा के दौरान सभी स्थानों पर शासकों एवं जनता द्वारा उनका हार्दिक स्वागत किया गया था।

वागड़ की जनता में सामाजिक चेतना–जागृति के लिए उत्तरदायी कारणों में मुख्य कारण आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती की राजस्थान यात्रा और राजस्थान में आर्य समाज की गतिविधियां थी। आर्य समाज मूल रूप से धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलन था। राजस्थान में स्वामी दयानन्द सरस्वती के भ्रमण के परिणामस्वरूप अनेक लोगों ने वैदिक धर्म के महत्व को समझा और हिन्दू समाज में

व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों के बारे मे जानकारी प्राप्त की। स्वामी दयानन्द सरस्वती के द्वारा राजस्थान में एक नई सामाजिक चेतना उत्पन्न हुई।

स्वामी दयानन्द सरस्वती–जीवन परिचय

पुनरूत्थान युग में स्वामी दयानन्द का स्थान अप्रतिम है। उन्हें तत्कालीन विषम परिस्थितियों और जटिल समस्याओं के अतिरिक्त ईसाईयों द्वारा भारतीयों के धर्म परिवर्तन और 1857 क्रांति की विफलता जैसे तथ्यों से भी दो–चार होना पड़ा। स्वामी दयानन्द के पूर्व राजाराममोहन राय ने भारत में नवजागरण की किरणें प्रसारित की थी, किन्तु उनकी राजनीतिक चेतना पाश्चात्य आदर्शों व सम्पर्कों से प्रभावित थी। जबकि स्वामी दयानन्द की समस्त विचारधारा का केन्द्र बिन्दु थे अपौरूषेय वेद। स्वामी दयानन्द के इसी जीवनदर्शन ने भारत की न सिर्फ सामाजिक एवं धार्मिक दिशा को प्रभावित किया बल्कि राजनीतिक चेतना को एक नई दिशा प्रदान की।

दयानन्द का जन्म 1824 ई. में गुजरात की मौरवी रियासत के अन्तर्गत टंकारा के ब्राह्मण कुल में हआ। उनके पिता वेदों के विद्वान थे और उन्होंने ही उनको वैदिक साहित्य तथा धर्मशास्त्रकी शिक्षा प्रदान की। किशोरावस्था में ही दयानन्द मानव जीवन की क्षणभंगुरता, संसार की नश्वरता, मुत्यु की शाश्वत विभीषिका आदि गूढ विषयों का चिंतन करने लगे। बौद्धिक जिज्ञासा में वे 21 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर घर से भाग निकले और 15 वर्षों तक देश के कोने–कोने में भटकते रहे। 1860 में मथुरा प्रज्ञाचक्षु संन्यासी विरजानन्द से भेंट हुई और उनसे प्रभावित हो उनके शिष्य बन गये। ढाइ–तीन वर्ष गुरू विरजानन्द के निकट रहकर धर्मविवेचना के मौलिक आधार पर शास्त्र परीक्षण की सूक्ष्म दृष्टि को प्राप्त किया।

आर्य समाज के प्रमुख सिद्धान्त

दयानन्द ने सन् 1875 में बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। इसके कुछ प्रमुख सिद्धान्त और नियम अधोलिखित है–

1– ईश्वर निराकार, अजन्मा और अमर है, वह सत्, चित्त और आनन्द है। वह सृष्टा पालक और रक्षक है। सबको उसकी उपासना करनी चाहिए।

2– वेद सत्य ज्ञान के स्त्रोत है।

3– बहु–देववाद और मूर्ति पूजा का खण्ड़न तथा अवतारवाद और तीर्थ यात्रा का विरोध किया।

4– वेदों के आधार पर यज्ञ, हवन, मंत्र पाठ आदि करना।

5– कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास करना।

6– अविद्या का नाश, विद्या व ज्ञान का प्रचार तथा शिक्षा का, विशेषकर स्त्री–शिक्षा का प्रसार करना चाहिए।

7– बाल विवाह तथा बहू विवाह का विरोध तथा विशिष्ट परिस्थितियों में विधवा विवाह का समर्थन करना।

8– सत्य को ग्रहण करने और असत्य के त्याग करने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए एवं सब व्यक्तियों को धर्मानुकूल आचरण करना चाहिए।

9– समस्त कार्य सत्य व असत्य का विचार करके करना चाहिए।

10– समाज का मुख्य उद्देश्य शारीरिक, सामाजिक, आत्मिक उन्नति और संसार का उपकार करना है।

राजस्थान में आर्य समाज ने सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया। उसने जाति प्रथा का घोर विरोध किया और घोषणा की कि –'' वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित है न कि जन्म पर।'' आर्य समाज ने जाति–प्रथा के कठोर बंधनों को ढीला करने का अथक प्रयास किया। आर्य समाज ने राजस्थान में दलितोंद्धार का काम भी किया।

11 अगस्त 1882 ई. को दयानन्द सरस्वती उदयपुर – महाराणा सज्जनसिंह से मिले और भारतीय संस्कृति की रक्षा करने पर बल दिया। 1883 ई. में दयानन्द ने उदयपुर में ही एक सामाजिक संस्था '' परोपकारिणी सभा'' की स्थापना की। आर्य समाज के सन्देश के प्रचार के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती अनेक स्थानों पर गये जिनमें अजमेर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, जोधपुर, शाहपुरा, बनेड़ा, मसूदा, अलवर आदि प्रमुख है। स्वामीजी ने स्थान–स्थान पर अपने चार तत्वों – स्वधर्म, स्वराज, स्वदेशी, स्वभाषा पर जोर दिया। उदयपुर से स्वामीजी जोधपुर गए वहां पर स्वामीजी के दूध में जहर मिला दिया गया जिससे वे अस्वस्थ होकर 27 अक्टूबर को अजमेर आए। उन्हें भिनाय की कोठी में ठहराया गया। डॉ. लक्ष्मणदास ने बड़ी तन्मयता से उनकी चिकित्सा एवं सेवा की लकिन वे ठीक नहीं हुए। 30 अक्टूबर 1883 ई. सायं 6 बजे स्वामीजी का देहान्त हो गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती से गोविन्द गिरी की भेंट –

गोविन्द गिरी को स्वामी दयानन्द सरस्वती के सम्पर्क में आने का सौभाग्य सन् 11 अगस्त 1882 से 2 मार्च 1883 में उनके उदयपुर प्रवास के दौरान प्राप्त हुआ। स्वामीजी वनवासी घुमक्कड़ बंजारा परिवार में जन्मे इस गोविन्द नामक युवक की ज्ञान पिपासा और समाज सेवा की दृढ इच्छा भाव को जानकर प्रसन्न हुए। गोविन्द गिरी को वनवासियों में सामाजिक बुराइयों को दूर करने, समाज को भक्ति भाव से एकजूट करने की प्रेरणा दी। तत्कालीन समय में राजस्थान, गुजरात और मालवा के अशिक्षित लाखों आदिवासी भीलों में स्वदेशी, स्वधर्म, आत्म सम्मान, कठोर परिश्रम और आवश्यकता पड़ने पर विदेशी राज का जुआ उतार फैकने का मूलमंत्र देकर गोविन्द गिरी उनके एकछत्र सर्वमान्य पूजनीय नेता बन गये।

सामाजिक क्रांति के अग्रणी गोविन्द गिरी ने आदिवासी समाज सुधार एवं जनचेतना के लिए संपसभा की स्थापना की। आदिवासियों की दूदशा उन्हें संस्कारित करने तथा ईसाई दुष्प्रचारकों एवं देश को स्वतंत्र कराने का संकल्प लेकर भगत आन्दोलन को गति प्रदान की। हिन्दू संस्कृति के अनुपालन व आचरण पर जोर देकर भील जाति के नैतिक चरित्र उन्नयन का कार्य किया। गोविन्द गिरी ने संप सभा का गठन कर भीलों को धर्मान्तिरित होने से रोककर महत्वपूर्ण कार्य किया। वे राजस्थान के आदिवासी भील जनजाति समाज में स्वातंत्रय आन्दोलन के जनक थे।

गोविन्द गिरी के चलाये भगत पंथ में आदिवासी वनवासी जुड़ते गये ओर इनमें राजनैतिक चेतना पनपने लगी। धार्मिक उपदेशों को ग्रहण करते हुए विशाल संख्या में आदिवासी कई कुरीतियों को परित्याग कर अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने लगे। यह भगत आन्दोलन अंग्रेजों की आंखों में चूभने लगा। अंग्रेज अधिकारियों ने सिरोही, ईडर, पालनपुर, मेवाड़, डूंगरपुर और बांसवाड़ा को सन्देश दिये कि गोविन्द गिरी के कार्यकलापों को तुरन्त रोका जाए। भक्ति एवं जनजाग्रति आन्दोलन रूका नहीं। एक अवतार के रूप में गोविन्द गिरी आदिवासियों में माने जाते है।

गोविन्द गिरी का भगत आन्दोलन –

वास्तव में 20वीं शताब्दी के आरंभिक दशक में गुरू गोविन्द गिरी के नेतृत्व में हुआ भील भगत आन्दोलन पूर्व में हुए आन्दोलन से अधिक सशक्त एवं व्यापक था।

इसका प्रभाव बांसवाड़ा, डूंरगपुर व मेवाड़ राज्य के साथ गुजरात के कुछ प्रदेशों पर भी पड़ा। 1908 में वह अपने गांव बांसिया आये व तभी उन्होंने भीलों में एकेश्वरवाद व नैतिक नियमों का पाठ पढाना शुरू किया। उससे भीलों को मदिरापान व अपराध वृत्ति छोड़ने तथा अंधविश्वासों को त्यागने का उपदेश दिया तथा उन्हें बहत्तर जीवन बिताने की और प्रेरित किया। बडी संख्या में गोविन्द गिरी के शिष्य बनने लगे जो ''भगत'' नाम से जाने जाते थे। 1907 से 1913 के मध्य उनके 6 लाख शिष्य बन गये।[7] किन्तु धीरे–धीरे गोविन्द गिरी के इस सामाजिक धार्मिक आन्दोलन में राजनीतिक तत्व भी प्रविष्ट हो गये। गोविन्द गिरी ने बांसवाड़ा व सूंथ राज्य की सीमा पर स्थित मानगढ़ पहाड़ी को अपना केन्द्र बनाया।

भगत आन्दोलन भक्ति आन्दोलन का ही एक रूप था और राजस्थान के जनजातीय क्षेत्र डूंगरपुर और बांसवाड़ा में गोविन्द गिरी के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ जिसके फलस्वरूप भील जनजाति में भगतों का एक नया वर्ग अस्तित्व में आया। भील भगतों ने अपने परम्परागत धर्म विश्वास व जीवन पद्धति से आगे बढ़कर नये विश्वासों व जीवन पद्धति को अपनाया। वस्तुतः इसे भीलों में एक सामाजिक, धार्मिक सुधार आन्दोलन के रूप में वर्णित किया जाता है। इस आन्दोलन के द्वारा आदिवासी भीलों ने स्वयं को शेष समाज के निकट या समकक्ष लाकर अपने उत्थान का प्रयास किया।

इस आन्दोलन के फलस्वरूप भगत भीलों के सामाजिक व धार्मिक जीवन में काफी परिवर्तन आया। उन्होंने एक नयी जीवन शैली विकसित की तथा अपने जीवन को नियमित व संतुलित बनाने का प्रयास किया। भगत आन्दोलन शोषण एवं अत्याचारों के विरूद्ध संस्कारयुक्त वनवासी समाज द्वारा विरोध करने का सशक्त माध्यम बना। गोविन्द गिरी ने संप सभा के द्वारा स्वदेशी व स्वराज के लिए जन आन्दोलन प्रारंभ किया। गोविन्द गिरी जानते थे कि स्वदेशी व स्वराज के लिए संस्कार युक्त समाज की आवश्यकता है। उन्होंने दुर्व्यसन मुक्त समाज को खड़ा करने का कार्य किया। शासकों द्वारा बलपूर्वक ली जा रही बैगार और व्यक्तिगत जीवन में नशाखोरी की आदत वनवासियों के जीवन को गुलामी की बेडियों में जकड़ी हुई थी। सम्प सभा व भगत आन्दोलन के माध्यम से वनवासियों ने समूह में शोषण के विरूद्ध आवाज उठाकर नई शक्ति का संचरण किया। वे हर चुनौती का सामना करने के लिये सक्षम बनने लगे।

सम्प सभा –

गोविन्द गिरी ने आदिवासियों में समाज सुधार, भक्ति व ज्ञान का प्रचार–प्रसार करने के लिए डगर–डगर, बस्ती–बस्ती, झोंपड़ी–झोंपड़ी तक व्यापक, सम्यक, एकता, संस्था शुद्धता और स्वतंत्रा का महत्व समझाते रहे। समाज में एकता के कार्य की प्रक्रिया को संस्थागत स्वरूप प्रदान करते हुए ''सम्प सभा'' का नाम दिया। एकता का लोकभाषा में नाम ही ''सम्प'' सभा होता है।

गोविन्द गिरी ने आदिवासी भीलों की सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिए धार्मिक आन्दोलन चलाया। उनके उपदेशों का प्रभाव यह पड़ा कि दक्षिणी राजस्थान के भील भारत के अन्य क्षेत्रों में होने वाली उन्नति से परिचित होने लगे। गोविन्द गिरी ने न केवल सामाजिक सुधार किया वरन् उनकी आर्थिक स्थिति को सुधारने का भी प्रयास किया। गोविन्द गिरी के उपदेशों से आदिवासी भीलों में पुर्नरूत्थान की संभावना दिखने लगी।

गुरू गोविन्द गिरी की सम्प सभा के आर्थिक–सामाजिक आन्दोलन के उद्देश्य इस प्रकार थे –

(i) मेहनत करो, खेती करो, मजदूरी करो और अपना तथा परिवार का पोषण अपनी मजदूरी से करो।

(ii) गांव–गांव में स्कूल खोलों, बच्चों को पढाओं और ज्ञान का प्रचार करो।

(iii) अपने बच्चों को संस्कारी बनाओ। संस्कार देने वाले लोगों से गांव में कथा वार्ता और व्याख्यान करवाओं।

(iv) अपने परिवार और समाज की आर्थिक स्थिति सुधारने का उपाय करो।

(v) स्वदेशी का उपयोग करो। अपनी जरूरत के लिए देश के बाहर की बनी हुई किसी वस्तु को काम में मत लो।

(vi) अदालतों में मत जाओ और अपने गांव के झगड़ों को गांव की पंचायत के फैसले को सवापरी मानो।

(vii) शराब मत पीओ और मांस मत खाओ।

(viii) चोरी, डाका, लूटमार मत करो।

(ix) बैठ–बैगार न करने का सुझाव।

(x) फिजूल खर्च तथा लड़ाई–झगड़ों से दूर रहो।

गोविन्द गिरी ने हिन्दू धर्म प्रेरित राजस्थान के भीलों का सामाजिक सुधार तथा उनके दैनिक जीवन शैली में पवित्रता एवं आचरण में सत्यता एवं शुद्धता का उपदेश निरन्तर दिया। उन्होंने अपने अनुयायियों हेतु एक नियमावली तैयार की जो संकल्प के रूप में थी। उनके अनुसार एक भक्त के लिए अपनाने हेतु निम्न कर्म थे–

(1) नियमित रूप से प्रातःकालीन स्नान करना।

(2) सूर्य दर्शन करना, राम का नाम जपना व सत्संग करना।

(3) झूठ नहीं बोलना।

(4) व्यभिचार नहीं करना।

(5) शराब व मांस का सेवन नहीं करना।

(6) चोरी छिनाली नहीं करना।

(8) पुरूषों द्वारा बड़ी–बड़ी चोटियां नहीं रखना। महिलाओं द्वारा लाख का चूड़ा नहीं पहनना।

(9) ग्यारस के दिन हल नहीं चलाना।

(10) धार्मिक तिथियों पर उपवास रखना आदि।

श्री गोविन्द गिरी ने जीव, अहिंसा, सत्यता, शारीरिक शुद्धता, ईश्वर स्मरण एवं पखवाड़े में बैलों को भी विश्राम देना जैसा श्रेष्ठ जीवन पंथ अपने अनुयायियों को दिया गया जो निश्चित रूप से एक मनुष्य में श्रेष्ठता व दयालुता के भाव का संचार करता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के देहावसान (सन् 1883) तक राजस्थान के क्षेत्र में अजमेर, जयपुर, रामगढ़, पावटा, शाहपुरा और चुरू मे आर्य समाजो की स्थापना हो गयी। उदयपुर, जोधपुर, चित्तौड़गढ़ आदि में महर्षि के प्रति श्रद्धा रखने वाले बहुत से लोग थे। पर अभी उनमें आर्य समाज स्वराज स्थापित नहीं हुये थे। राजस्थान के आर्य समाजों में अजमेर का समाज सबसे अधिक महत्वपूर्ण था और अब तक की उसकी वही स्थिति कायम है।

स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी महाराज का जीवन परिचय –

परम् पूजनीय संन्यासी श्री स्वामी स्वतंत्रतानन्दजी महाराज का जन्म 11.4.1912 को बिहार प्रान्त में ब्राह्मण कुल में हुआ। उनकी शिक्षा बी.ए. तथा एल.एल.बी.

पटना विश्वविद्यालय से पूर्ण हुई। तत्पश्चात् उन्होंने 1937 में एक वर्ष तक वकालत का काम किया। अक्टूबर 1938 में घर त्यागकर बनारस चले आये। अक्टूबर 1939 में ही वे वापस फरूखाबाद जिले में आकर श्री स्वामी सचिदानंदजी महाराज के समीप आकर वेदान्त व व्याकरण का अध्ययन करने लगे और सन् 1941 दिसम्बर तक उनका यही क्रम चलता रहा। 1942 में कुम्भ मेले पर प्रयाग गये और वहां से लौटते–लौटते अगस्त 1942 में मथूरा जिले के ब्रह्मांड़ घाट पर ठहरकर वाल्मिकी रामायण का परायण किया और वहीं 9 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव किया जाना मालुम होने पर वहां से वे इसमें भाग लेने चल पड और अलीगढ़ जिले में इगलास तहसील में वहां स्वामी ब्रह्मानंदजी आर्य संन्यासी से सम्पर्क में आये और वे पहले जेल से लौटे थे इसलिए थके हुए थे इस कारण वे जेल जाने में इच्छुक नहीं थे।

अतः स्वामीजी अकेले ही इगलास से तिरंगा लेकर जूलूस के साथ निकले और उन्हें पुलिस द्वारा पकड़ लिया गया। 27 अगस्त, 1942 सायंकाल 6 बजे पुलिस ने उन्हें पकड़ा। 18 अगस्त 1942 को उन्हें अलीगढ़ जेल में पहुंचा दिया गया। रातभर हवालात (थाने) में रहे। दफा 26 डिफेन्स ऑफ इण्डिया रूल्स के अन्तर्गत राज्य सरकार के आदेश से यह अवधि और बढ़ाकर और अधिक अवधि तक बंद रखा गया। अक्टूबर 1944 में आगरा सेन्ट्रल जेल भेजा गया। उन्हें 9–10 जनवरी 1945 को जेल से रिहा किया गया और वे पुनः अलीगढ़ आ गये। वहां पर उन्होंने विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया। अगस्त 1945 तक वे अलीगढ़ में ही रहे। सितम्बर 1945 में वे ऐटा आ गये। वहां पर आर्य समाज आश्रम में रहे व पढ़ने व पढ़ाने (स्वाध्याय) में लगे रहे। अगस्त 1947 में स्वतंत्रता मिल चुकी थी। 1947 जून तक ऐटा में ही रहे।

उसके पश्चात् स्वामीजी उत्तराखंड भ्रमण पर निकले। बीजनोर आश्रम, लखनऊ सम्मेलन में भाग लिया और भमण के दौरान गंगा किनारे बुलन्द शहर जिले में करणवास नामक स्थान पर जहां पर कि स्वामी दयानन्द भ्रमण करते हुए विराजे थे, वहां पहुंचे। वहां पर जहां दयानन्दजी ठहरे थे, विश्राम किया था, उस भूमि को कुछ लोगों ने अपने कब्जे में कर लिया था वह आर्य समाज (दयानन्द) की भूमि थी उसका मुकदमा चल रहा था। वहां करीब एक माह स्वामीजी ठहरे इस प्रकार 1948 जून के पश्चात् से लेकर 1950 तक का समय स्वामीजी का उत्तराखंड़ भ्रमण में बीत गया। 19 जुलाई 1951 में स्वामीजी चित्तौड़गढ़ (गुरूकुल) में पहुंचे। वहीं 9 महिना गुरूकुल की सेवा की। फिर

प्रतापगढ़ आये। उन्हें वानप्रस्थी स्वामी सत्यानंदजी जोधपुर के सिंधी थे वो प्रतापगढ़ में आदिवासियों की सेवा करते थे, वहां ले आये। चार वर्ष तक प्रतापगढ़ के पास धमोत्तर नामक जगह पर सत्यानंदजी के सहयोग से आश्रम संचालित किया। वहां उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहने लगा और वे पुनः उत्तरप्रदेश चले गये।

बांसवाड़ा में आर्य समाज की स्थापना –

सन् 1957 में पंजाब में हिन्दी सत्याग्रह में भाग लिया। जब हिन्दी रक्षा आन्दोलन चला था। अप्रेल 1958 में पुनः प्रतापगढ़ (राज.) आ गये। तथा स्वामीजी दिसम्बर 1958 में बांसवाड़ा आ गये और उन्हीं के द्वारा आर्य समाज की स्थापना हुई। इसमें उन्हें सर्वप्रथम रामलालजी मेहता रिटायर्ड अध्यापक का व गौतमलालजी डेन्टिस्ट का सहयोग प्राप्त हुआ। 1 जुलाई 1959 में दयानन्द सेवाश्रम में लगे हुए हैं। सैकड़ों छात्र दयानन्द सेवाश्रम रातीतलाई वेद मंदिर एवं कुशलगढ़ स्थित दयानन्द सेवाश्रम में रहकर अपने जीवन का निर्माण कर चुके है, इन आश्रमों में रहकर लाभान्वित हुए है जिनमें से कई महत्वपूर्ण पदों पर राज्य सेवा में कार्यरत है।

कुशलगढ़ में आर्य समाज की स्थापना –

परमपूज्य स्वामीजी ने बांसवाड़ा जिले के कोने–कोने में भ्रमण किया। बांसवाड़ा में रातीतलाई स्थित दयानंद सेवाश्रम चलाने के बाद 10 मई, 1969 को कुशलगढ़ में श्री आश्रम की स्थापना की और वहां पर भी जमीन मकान की सुविधा सुलभ करवाई, जहां 20 छात्रों के रहने की सुविधा है। वहां 6 से 12वीं कक्षा के छात्र है। बांसवाड़ा स्थित आश्रम में 30 छात्रों के रहने की सुविधा है। अभी सुविधा में बढोत्तरी हुई हैं। यज्ञशाला सभा भवन का भी निर्माण हुआ है।

स्वामीजी के उपदेश –

जनजाति समाज में काफी कमजोरियां व बुराईयां है। जिनमें शराबखोरी, बाल–विवाह, शिक्षा में कमी, भाईचारें का अभाव, जनप्रतिनिधियों व पढ़े–लिखे लोग भी बुराई में फंसे हुए है, उनके लिए उन्होंने कहा कि जब तक पढ़े लिखे व जन नेता बुराई नहीं छोड़ेंगे तब तक सुधार की बात संभव नहीं है। पढे लिखे व्यक्ति निजी स्वार्थ में लग जाते है। समाज की तरफ झांकते भी नहीं है। पिछड़े वर्गों में जन प्रतिनिधियों का समाज में सहयोग नहीं है। पैस वाला पैसे के पिछे भाग रहा है। नेता केवल वोट की

रोटियां सेकते है। सुधार की ओर ध्यान नहीं देते। स्वामीजी ने ये विचार काफी दुःखी होकर व्यक्त किये कि अंग्रेजों के हाथों कांग्रेस ने गोलियां खाइ, शराब छुड़ाने के लिए वो ही कांग्रेस आज वोट के लिए दारू बिकवा रही है, ओर दारू पिलाकर वोट बटोरती है और अन्य पार्टी गुट भी वोट के लिए कमजोर व पिछड़े वर्गों में दारू पिलाते है।

विकास के संदर्भ में स्वामीजी का कहना था कि भक्ति मार्ग के लोग अग्रणी है क्योंकि वे ही तेज बुद्धि के अग्रणी लोग है। उन्होंने इस आदिवासी समाज के लिए एक ही शादी करने, मितव्ययी बनने, सदाचार की शिक्षा व संस्कार देने पर जोर दिया। छोटे परिवार रखने का महत्वपूर्ण आवश्यकता बताई। स्वामीजी को 15 नवम्बर 1997 को बांसवाड़ा के नागरिकों द्वारा अभिनन्दन किया गया। अन्ततः 17 अगस्त 2003 को बांसवाड़ा में परम पूज्य आर्य संन्यासी एवं स्वतंत्रता सैनानी स्वामी स्वतंत्रानंदजी का 92 वर्ष की उम्र में निधन हो गया, पर स्वामीजी ने जो बीज बोये है वो वागड़ की धरा पर उगकर व सघन छाया व फलदार वृक्ष के रूप में पल्लवित होगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1– प्रो. के.एस. गुप्ता एवं डॉ. जे.के. ओझा (2014) '' राजस्थान का इतिहास एक सर्वेक्षण'' , लिट्रेरी सर्किल, जयपुर, पृ.सं. 266–267

2– प्रकाश व्यास (2001) '' राजस्थान का सामाजिक इतिहास'', पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ.सं. 247–248

3– रामगोपाल मीणा (2013) ''भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के मुद्दे, जागरूकता एवं ओजस्विता'', राज पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, पृ.सं. 28–29

4– भवानीलाल भारतीय (1983) '' नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती'', वेदिक पुस्तकालय, अजमेर, पृ.सं. 2–6

5– बी.एन. लुणिया (1993) '' आधुनिक भारत जन–जीवन और संस्कृति'', कमल प्रकाशन, इन्दौर (मध्यप्रदेश), पृ.सं. 76–77

6– बी.एल. पानगड़िया (2010) ''राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 47–48

7– सत्य शकुन (2004) '' मुक्ति पथ के प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती'', संस्कृत साहित्य दिल्ली, पृ.सं. 222–224

8– लखावत, औंकार सिंह (2012) '' स्वातंत्रय वीर गोविन्द गुरू और वनवासियों का बलिदान'' तीर्थ पैलेस प्रकाशन, सोड़ाला, जयपुर, पृ.सं. 9–10

9– भगवतीलाल जैन (1882) '' स्वतंत्रता संग्राम में भगत आन्दोलन का योगदान'' (साधु गोविन्द गिरी और भगत आन्दोलन), साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर, पृ. सं. 5–6

10– भगवतीलाल जैन (1986) '' हिन्दू धर्म प्रेरित राजस्थान के भीलों का सामाजिक सुधार'' उदयपुर, पृ.सं. 83–87

11– वरिष्ठ, विजय कुमार (1997) ''भगत मूवमेन्ट'' ए स्टडी ऑफ कल्चरल ट्रांसफारमेशन ऑफ द भील्स ऑफ साउथर्न राजस्थान'' श्रुति पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. सं. 206–207

12– पेमाराम (1980) '' एग्रेरियन मूवमेन्ट इन राजस्थान'' जयपुर, पृ. सं. 67–69

13– लखावत, औंकार सिंह (2012) '' स्वातंत्रय वीर गोविन्द गिरी और वनवासियों का बलिदान'' तीर्थ पैलेस प्रकाशन, जयपुर, पृ.सं. 13–14

14– सत्यकेतु विद्यालंकार (1980) '' आर्य समाज का इतिहास'' प्रथम भाग, आर्य स्वाध्याय केन्द्र, सफदरजंग, नई दिल्ली, पृ. सं. 596